संस्कृतम्

सीखने के प्रतिफल	सामग्री/संसाधन	सप्ताहवार सुझावात्मक/गतिविधियाँ (अध्यापकों के सहयोग से अभिभावकों द्वारा संचालित)
• संस्कृत भाषा की वर्णमाला के वर्णों को जान सकता है तथा अन्य किसी एक भाषा के वर्णमाला के वर्णो में साहचर्य एवं अँतर समझ सकते हैं। • हलन्तादि चिह्नों को समझ सकते हैं। • संस्कृत भाषा के सरल और लघु शब्दों को सीखने में समर्थ होते हैं तथा कतिपय शब्दों को स्मरण पूर्वक बोल सकते हैं। • संस्कृत भाषा के कुछ संज्ञा एवं क्रिया बोधक शब्दों को बोल सकते हैं। • कतिपय संज्ञा एवं क्रिया शब्दों के अर्थ दूसरी भाषा में कह सकते हैं।	एनसीईआरटी द्वारा अथवा राज्यों द्वारा निर्मित पाठ्यपुस्तक, घर में उपलब्ध पठन लेखन सामग्री अन्य दृश्य श्रव्य सामग्री जैसे इंटरनेट वेबसाइट से, रेडियो दूरदर्शन यूट्यूब (एन.सी.ई.आर.टी. ऑफिशियल) चैनल आदि के माध्यम से संस्कृत भाषा विषयक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।	**प्रथम सप्ताह** **श्रवण, पठन एवं लेखन कौशल** 1. यदि छात्र एवं छात्राएँ प्रथम बार संस्कृत पढना प्रारम्भ कर रहें हैं तो शिक्षक/शिक्षिका छात्रों को संस्कृत भाषा की वर्णमाला का शुद्ध उच्चारण कराएँ तथा शुद्ध पढने हेतु प्रेरित करें। पूर्वज्ञात वर्णमाला से संबंध स्थापित करते हुए संस्कृत वर्णमाला का परिचय अवश्य कराएँ। 2. वर्णमाला परिचय के अनन्तर तत्सम्बन्धी बोध प्रश्नों के द्वारा छात्रों के ज्ञान का संपरीक्षण करें यदि कहीं न्यूनता हो तो उसे पूर्ण करें। 3. उच्चारण के साथ-साथ लेखन का भी अभ्यास करायें, एतदर्थ हलन्तादि चिह्नों का ध्यान पूर्वक बोध कराएँ। **द्वितीय सप्ताह** (प्रथम सप्ताह की गतिविधियों के साथ सरल संज्ञापदों एवं क्रियापदों का उच्चारण, लेखन कराएँ) **श्रवण, भाषण, पठन एवं लेखन कौशल** 1. हलन्तादि चिह्नों को ध्यान में रखते हुए सरल संज्ञापदों एवं क्रियापदों का लेखन करायें। 2. लिखे हुए पदों को उच्चारण हेतु प्रेरित करें। 3. उच्चारण एवं लेखन में यदि कोई दोष हो तो उसे शाँत भाव से समझाते हुए संशोधित कराएँ। लेखन हेतु उदारणार्थ कुछ शब्द निम्न हैं यथा — मयूरः, धेनुः, कृष्णः इत्यादि- • म्+अ+य्+अ+र्+अ= मयूरः • ध्+ए+न्+उः= धेनुः • क्+ऋ+ष्+ण्+अः= कृष्णः • बालकः, बालिका, माता, पिता, भ्राता, अनुजः, अनुजा, अग्रजः, अग्रजा, पितामहः, पितामही, पितृव्यः, पितृव्या इत्यादि। • पुस्तकम्, चषकः, दीपकः, आसन्दः, दूरभाषः, पर्यङ्कः आदि। • कृषकः, वृषभः, गौः, भल्लूकः, मण्डूकः, कपोतः काकः आदि। **क्रियापद यथा** • पठति, लिखति, वदति, हसति, खादति, गच्छति इत्यादि।

• पाठ्यपुस्तक में शब्द परिचय के अन्तर्गत विद्यमान पुल्लिंग, स्त्रीलिंग एवं नपुंसकलिंग शब्दों को समझ सकते हैं। • पठित शब्दों का वचनों के साथ शुद्ध उच्चारण करते हैं। • पद संयोजन करके लघु वाक्य निर्माण कर सकते हैं।		**तृतीय सप्ताह** (प्रथम एवं द्वितीय सप्ताह की गतिविधियों के साथ पुल्लिंग, स्त्रीलिंग एवं नपुंसकलिंग के शब्दों का वचनों के ज्ञान सहित बोध करायें तथा वाक्य विन्यास कराएँ) **पठन, लेखन, श्रवण एवं भाषण कौशल** • पाठ्यपुस्तक में विद्यमान तथा प्रतिदिन व्यवहार में आने वाले शब्दों का परिचय पुल्लिंग, स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसकलिंग के आधार पर कराएँ। • शब्दों को लिंग एवं वचनों के आधार योजना बताएँ। • ज्ञात शब्दों किम् एवं एतत् तथा प्रश्नवाचक पदों से जोड़कर पद/वाक्य निर्माण करना सिखाएँ। यथा — • प्रश्न– एषः कः?/ एषा का ?/एतत् किम्? • उत्तरम्– एषः बालकः।/एषा बालिका।/एतत् फलम्। • प्रश्न– एतौ कौ?/एते के?/एते के? • उत्तरम्– एतौ बालकौ।/एते बालिके?/एते फले? • प्रश्न– एते के?/एताः काः?/एतानि कानि? • उत्तरम्– एते बालकाः।/एताः बालिकाः।/एतानि फलानि। mk
• वचन एवं लिंग के अनुसार पदों का संयोजन करके लघु वाक्य निर्माण कर सकते हैं। • प्रश्नार्थक शब्दों को समझकर उत्तर देने में समर्थ होते हैं। • पठित अव्ययों का प्रयोग कर सकते हैं। • लघु प्रश्नों के उत्तर देने में समर्थ है। • पठित श्लोकों का उच्चारण कर सकते हैं।		**चतुर्थ सप्ताह** (पूर्व सप्ताह की गतिविधियों के साथ क्रियापदों एवं अव्ययों का प्रयोग करके वाक्य विन्यास करना तथा सुभाषित उच्चारण करना सिखाएँ) **पठन, लेखन, श्रवण एवं भाषण, कौशल** • पाठ्यपुस्तक में विद्यमान सुभाषित श्लोकों का सस्वर उच्चारण करायें। • पाठ्यपुस्तक में विद्यमान तथा अन्य सरल संस्कृत शब्दों का सार्थक क्रम में लेखन एवं विन्यास करना सिखाएँ। • ज्ञात शब्दों को क्रिया पद के साथ वचनों के आधार पर योजित करना बताएँ। • कर्ता एवं क्रियापद के मध्य अव्ययों का प्रयोग करना सिखाएँ। यथा – अत्र, तत्र, यत्र, सर्वत्र, किम्, कुत्र, कति, कदा, किमर्थम्, कुतः, तदा, यदा, यद्यपि, तथापि इत्यादि। **चतुर्थ सप्ताह** (पूर्व सप्ताह की गतिविधियों के साथ क्रियापदों एवं अव्ययों का प्रयोग करके वाक्य विन्यास करना तथा सुभाषित उच्चारण करना सिखाएँ)

		पठन, लेखन, श्रवण एवं भाषण, कौशल • पाठ्यपुस्तक में विद्यमान सुभाषित श्लोकों का सस्वर उच्चारण कराएँ। • पाठ्यपुस्तक में विद्यमान तथा अन्य सरल संस्कृत शब्दों का सार्थक क्रम में लेखन एवं विन्यास करना सिखाएँ। • ज्ञात शब्दों को क्रिया पद के साथ वचनों के आधार पर योजित करना बताएँ। • कर्ता एवं क्रियापद के मध्य अव्ययों का प्रयोग करना सिखाएँ। यथा- अत्र, तत्र, यत्र, सर्वत्र, किम्, कुत्र, कति, कदा, किमर्थम्, कुतः, तदा, यदा, यद्यपि, तथापि इत्यादि। **वाक्यविन्यास यथा** • प्रश्नः – अत्र बालकाः किमर्थम् आगच्छन्ति ? • उत्तरम् – अत्र बालकाः पठनार्थम् आगच्छन्ति। • प्रश्नः – फलं कुत्र अस्ति ? • उत्तरम् – फलं तत्र अस्ति इत्यादि। **श्लोक**– उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः। न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।
• सरलशब्दों में परिचयात्मक शब्दों का प्रयोग करने में समर्थ होते हैं। • विभक्त्यन्त पदों को बोलने में समर्थ होते हैं। • द्वितीया व तृतीया विभक्त्यन्त पदों को बोलने में समर्थ होते हैं।		**पञ्चम सप्ताह** (पूर्व सप्ताह की गतिविधियों के साथ विद्यालय संबंधी परिचय सरल शब्दों मे कराएँ तथा द्वितीया एवं तृतीया विभक्ति का प्रयोग बतायें) **पठन, लेखन, श्रवण एवं भाषण कौशल** • पाठ्यपुस्तक के अनुसार सरल शब्दों में विद्यालय आदि के वातावरण का परिचय कराएँ। • संस्कृत शब्दयुक्त वाक्य में कर्ता कर्म एवं करण कारक की पहचान तथा लेखन करना सिखाएँ। यथा – • एषः विद्यालयः। अत्र छात्राः शिक्षकाः शिक्षिकाश्च सन्ति। एषा सङ्गणकयन्त्रप्रयोगशाला एस्ति। एतानि सर्वाणि सङ्गणक यन्त्राणि सन्ति। एतत् अस्माकं विद्यालयस्य उद्यानम् अस्ति। उद्याने पुष्पाणि विलसन्ति। **द्वितीया एवं तृतीया विभक्ति प्रयोग यथा** • प्रश्नः – ताः बालिकाः किं पठन्ति ? • उत्तरम् – ताः बालिकाः पुस्तकं पठन्ति। • प्रश्नः – सः केन यन्त्रेण पठति? • उत्तरम् – सः मोबाइलयन्त्रेण/सङ्गणकयन्त्रेण पठति।

• सरल शब्दों में लघु परिचयात्मक वर्णन लिखने में समर्थ होते हैं। • परस्पर वार्तालाप से संस्कृत सम्भाषण में समर्थ होते हैं। • चतुर्थी विभक्त्यन्त पदों को बोलने में समर्थ होते हैं। • पञ्चमी विभक्त्यन्त पदों को बोलने में समर्थ हैं।		**षष्ठ सप्ताह** (पूर्व सप्ताह की गतिविधियों के साथ वर्णनात्मक लेखन व परस्पर वार्तालाप सिखाएँ तथा चतुर्थी एवं पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग बतायें) **पठन, लेखन, श्रवण एवं भाषण, कौशल** • पाठ्यपुस्तक के अनुसार सरल शब्दों में वर्णनात्मक लेखन का अभ्यास कराएँ। • परस्पर वार्तालाप से सम्बन्धित पाठ पढ़ाते हुए वार्तालाप का अभ्यास कराएँ। • संस्कृत शब्दयुक्त वाक्य में संप्रदान एवं अपादान कारक की पहचान तथा लेखन करना सिखाएँ। यथा – • एषः समुद्रतटः। अत्र जनाः पर्यटनाय आगच्छन्ति। केचन तरङ्गैः क्रीडन्ति। केचन च नौकाभिः जलविहारं कुर्वन्ति। तेषु केचन कन्दुकेन क्रीडन्ति। बालिकाः बालकाश्च बालुकाभिः बालुकागृहं रचयन्ति। • हुमा – यूयं कुत्र गच्छथ? इन्दरः- वयं विद्यालयं गच्छामः फेकनः – तत्र क्रीडास्पर्धाः सन्ति । वयं खेलिष्यामः। रामचरणः – किं स्पर्धाः केवलं बालकेभ्यः एव सन्ति? प्रसन्ना – नहि बालिकाः अपि खेलिष्यन्ति। इत्यादि.. **चतुर्थी एवं पञ्चमी विभक्ति प्रयोग यथा** • प्रश्नः – सः बालकाय किं ददाति ? • उत्तरम् – सः बालकाय पुस्तकं ददाति। • प्रश्नः – बालिका कुतः आगच्छति? • उत्तरम् – बालिका गृहात् आगच्छति। **सप्तम सप्ताह** (पूर्व सप्ताह की गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए छन्दोबद्ध पाठ का सस्वर श्लोकोच्चारण के साथ उसका बोध तथा षष्ठी एवं सप्तमी विभक्ति का प्रयोग बताएँ) **पठन, लेखन, श्रवण एवं भाषण, कौशल** • पाठ्यपुस्तक में समागत छन्दोबद्ध पाठ के श्लोकों का शुद्ध उच्चारण पूर्वक बोध कराएँ। यथा – • सूर्यस्तपतु मेघाः वा वर्षन्तु विपुलं जगत्। • कृषिकाः कृषिको नित्यं शीतकालेपि कर्मठौ इत्यादि.. • पदों में संबंध एवं अधिकरण की पहचान तथा लेखन करना सिखाएँ। यथा –

• गद्यपाठगत पदों के अर्थ को समझने में समर्थ होते हैं। • संस्कृतगीत श्लोक आदि काव्य गायन में समर्थ होते हैं। • रुचि पूर्वक संस्कृतगीत को गायन के साथ शुद्धरूप से पढ़ सकेगें।		• षष्ठी एवं सप्तमी विभक्ति का प्रयोग, यथा- • प्रश्नः- एतत् धनं कस्य अस्ति? • उत्तरम्- एतत् धनं मोहनस्य अस्ति । • प्रश्नः- शिक्षिका कुत्र उपविशति? • उत्तरम्- शिक्षिका आसन्दे उपविशति । **अष्टम सप्ताह** (पूर्व सप्ताह की गतिविधियोंके साथ लघु गद्य लेखन, कविता एवं गीत गायन हेतु प्रेरित करें) **पठन, लेखन, श्रवण एवं भाषण, कौशल** • पाठ्यपुस्तक में समागत कथागद्यों का बोध कराते हुए लेखन हेतु प्रेरित करें। यथा- दशमः त्वम् असि - • एकदा दश बालकाः स्नानाय नदीम् अगच्छन्। ते नदीजले चिरं स्नानम् अकुर्वन्। ततः ते तीर्त्वा पारं गताः। तदा तेषां नायकः अपृच्छत्- अपि सर्वे बालकाः नदीम् उत्तीर्णाः? तदा कश्चित् बालकः अगणयत् – एकः, द्वौ, त्रयः, चत्वारः पञ्च, षट्, सप्त, अष्टौ, नव इति सः स्वं न अगणयत्। ते दुःखिताः अतिष्ठन्। तदा तत्र कश्चित् पथिकः आगच्छत्। पथिकः तान् अगणयत् अवदच्च दशमः त्वम् असि इति। तत् श्रुत्वा प्रहृष्टाः भूत्वा सर्वे गृहम् अगच्छन्। विमानयानं रचयामः... इत्यादि। • कुत आगच्छसि मातुल चन्द्र! कुत्र गमिष्यसि मतुल चन्द्र!.. इत्यादि।